4

एक आदर्श नर्सरी विद्यालय

ज्योतिकांत*

नर्सरी विद्यालय वह स्थान होता है जिसमें बच्चा प्राइमरी विद्यालय जाने से पहले प्रवेश करता है और वहाँ पर समय व्यतीत करता है। यह बच्चे का दूसरा घर होता है। पहली बार बच्चा अपने परिजनों से दूर होता है, इसलिए ज़रूरी है कि बच्चों को यहाँ पर प्यार व सुरक्षापूर्ण वातावरण मिले ताकि बच्चा खुशी-खुशी यहाँ रह सके व अभिभावक भी बच्चे की सुरक्षा को लेकर चिंतित नहीं हों। प्रस्तुत लेख में एक आदर्श नर्सरी विद्यालय कैसा होना चाहिए, इस पर चर्चा की गई है।

प्राय: तीन वर्ष के बच्चे नर्सरी विद्यालय में प्रवेश करते हैं। इस उम्र में बच्चों का मानसिक विकास बहुत तीव्र गति से होता है। इस समय बच्चे को जो सिखाया जाता है, उसमें जैसी आदतें डाली जाती हैं, वह उसमें सदा के लिए समा जाती हैं। अतः आवश्यक है कि बच्चे को अच्छा वातावरण घर एवं विद्यालय में प्रदान कराया जाए। यदि बच्चे का अच्छे वातावरण में पालन-पोषण करेंगे तो वह आगे चलकर समाज व देश के लिए सभ्य नागरिक बनेगा।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता

प्रारंभिक बाल्यावस्था मिट्टी की तरह लचीली होती है जिस प्रकार हम मिट्टी को तोड़-फोड़कर जैसा आकार देना चाहें, दे सकते हैं, उसी प्रकार इस उम्र में बच्चों में जैसे संस्कार डालना चाहें, डाल सकते हैं। बच्चे की स्थिति पौधे की तरह है। यदि अच्छी खाद, बीज, मिट्टी, पानी, हवा, रोशनी का प्रयोग करते हैं तो पौधा अच्छा विकसित होता है, इनके अभाव में पौधा मुरझा जाता है। अच्छे माहौल में रहकर ही बच्चा अच्छी आदतों को सीख सकता है। विद्यालय का दायित्व हो जाता है कि वह बच्चों को अच्छा परिवेश प्रदान करे जिसमें बच्चे के सभी गुण विकसित हो सकें। यदि मकान की नींव ही कच्ची रख दी जाएगी तो मकान ज़्यादा दिन तक नहीं टिक सकेगा।

आज के समय में बच्चों को नर्सरी विद्यालय में भेजना बहुत ज़रूरी हो गया है क्योंकि आजकल ज़्यादातर परिवार एकाकी होते हैं। परिवार में सिर्फ़ माता-पिता ही होते हैं। माता-पिता दोनों नौकरी पर जाते हैं और बच्चे अकसर सहायिकाओं की देख-रेख में छोड़ दिए जाते हैं। उन्हें यह ज्ञात नहीं होता है कि बच्चे को पीछे से क्या-क्या सिखाना है व उनके साथ किस तरह गुणवत्तापूर्ण समय व्यतीत करना है। विभिन्न शोधों में यह पाया गया कि वे बच्चे

*मुख्य अध्यापिका, आई.आई.टी. नर्सरी स्कूल, हौज़ खास, नयी दिल्ली 110016

© NCERT not to be republished

जो प्राइमरी विद्यालय जाने से पूर्व नर्सरी/पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में जाते हैं, उनके पढ़ने-लिखने की तैयारी के लिए ज़रूरी कौशलों का विकास ज़्यादा अच्छा होता है। खासकर उनकी तुलना में जो कि सीधा प्राइमरी विद्यालय में प्रवेश करते हैं इसलिए ज़रूरी है कि बच्चों को नर्सरी विद्यालय में समय व्यतीत करने का अवसर दिया जाए।

आदर्श नर्सरी विद्यालय की शिक्षण विधि

करके सीखना— एक आदर्श नर्सरी विद्यालय की शिक्षण विधि "करके सीखना" के सिद्धांत पर आधारित होनी चाहिए क्योंकि जो बच्चा करके ज्ञान सीखता है, वह ज़्यादा समय तक स्थायी रहता है। उदाहरण के लिए, यदि बच्चे को सिखाना चाहते हैं कि पौधा किस प्रकार उगता है तो केवल मौखिक रूप से नहीं बताना होगा, व्यावहारिक रूप से बच्चे को प्रयोग करके दिखाना होगा, बच्चों को मैदान में ले जाकर खुशी से मिट्टी खुदवाएँगे, खाद और बीज डलवाएँगे। साथ ही एक पौधे को बंद अलमारी में रखेंगे। कुछ दिन बाद अलमारी खोलकर पौधे को निकालकर बच्चों को दिखाएँगे और बताएँगे कि हवा, रोशनी, पानी नहीं मिलने के कारण यह पौधा मुरझा गया है। इस प्रयोग को करने से बच्चा पौधे के लिए पानी, रोशनी, हवा का महत्व समझ जाएगा।

इसी तरह केवल मौखिक रूप से बच्चों को बताने की बजाय करके दिखाएँगे कि कौन-कौन सी चीज़ें पानी में घुलती हैं और कौन-कौन सी चीज़ें नहीं। पानी में लकड़ी का टुकड़ा, थर्माकोल, कील, सिक्का, मोती, पत्ता आदि डालकर दिखाएँगे। स्वयं क्रिया करने से वह डूबने और न डूबने वाली वस्तुओं के विषय में सरलता से ज्ञान प्राप्त कर लेगा।

खेल क्रिया बच्चों को सिखाने का माध्यम होनी चाहिए। बच्चे खेल में बहुत रुचि लेते हैं और खेल के द्वारा शीघ्रता और सरलता से सीख भी लेते हैं। रोज़ाना स्वतंत्र व निर्देशित खेलों के लिए समय निश्चित होना चाहिए। खेल के माध्यम से उन्हें पता भी नहीं चलता कि वे सीख रहे हैं और वे सीख जाते हैं।

उदाहरण के लिए, अगर बच्चे को 'म' और 'प' स्वर सिखाना चाहते हैं तो केवल कॉपी पर 'प' और 'म' लिखना नहीं सिखाएँगे वरन् प स्वर से संबंधित अन्य क्रियाएँ भी करवाएँगे। 'प' स्वर से संबंधित चित्रों के कई कार्ड बना सकते हैं, जैसे— पेड़, पत्ता पायल, पपीता आदि। इसी प्रकार 'म' स्वर से संबंधित चित्रों के कई कार्ड बना सकते हैं, जैसे— मटका, मछली, माला, मटर आदि। बच्चों को 'म' और 'प' स्वर का खेल समूह में करवा सकते हैं। बच्चों को कार्ड बाँटेंगे और वे बारी-बारी से अपना कार्ड डालेंगे। यदि किसी बच्चे का कार्ड 'प' स्वर के ऊपर 'प' स्वर का आ जाता है तो सारे कार्ड उस बच्चे के हो जाएँगे। जैसे पतंग के चित्र के ऊपर पायल का चित्र।

अभ्यास की पुनरावृत्ति— ऐसा नहीं होना चाहिए कि किसी भी क्रिया को करवाकर कई दिनों के लिए छोड़ दिया जाए। क्रिया का बार-बार अभ्यास कराना चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि क्रिया का अभ्यास कराते समय उसमें विभिन्नता हो। जैसे यदि आज रंगों का ज्ञान खेलों के माध्यम से करवा रहे हैं तो दूसरे दिन रंगों का ज्ञान 'ऑब्जेक्ट्स व डोमेनोज़' के माध्यम से करवा सकते हैं व तीसरे दिन रंगों का ज्ञान कहानी के माध्यम से करवा सकते हैं। यदि क्रिया को विभिन्न ढंग से कराया जाए तो बच्चे उसमें बहुत रुचि लेते हैं।

© NCERT not to be republished

सरलता से कठिनता की ओर— आदर्श नर्सरी विद्यालय की शिक्षण विधि की यह विशेषता होनी चाहिए कि वह सरलता से कठिनता के सिद्धांत पर आधारित हो। यदि बच्चों को अनुक्रम की क्रिया करवा रहे हैं तो यह ज़रूरी है कि पहले केवल 3 कार्डों से क्रमबद्ध क्रिया करवाएँ। जब बच्चा 3 कार्ड से क्रिया को सफलतापूर्ण करने लगता है तो बाद में 4/5 कार्डों द्वारा भी क्रिया को करवा सकते हैं। इसी प्रकार पहले सरल शब्दों वाली छोटी-छोटी कविताएँ सिखाएँगे, बाद में बड़ी कविताएँ।

रुचि का सिद्धांत— बच्चों को सिखाने के लिए ऐसे माध्यम अपनाने चाहिए जिनमें बच्चे रुचि लेते हैं। खेल, गीत, कहानी, कठपुतली/पपेट में बच्चों की बहुत रुचि होती है। इनके माध्यम से बच्चे सहजता से सीख लेते हैं। इन सब क्रियाओं के माध्यम से बच्चों को रंग, आकार, वातावरण संबंधी ज्ञान दे सकते हैं। यदि आप बच्चों को सफ़ाई का ज्ञान केवल मौखिक रूप से समझाएँगे तो वह उसमें ज़्यादा रुचि नहीं लेगा, लेकिन अगर हम विभिन्न जानवरों के पपेट के माध्यम से अभिनय करके सिखाते हैं तो वह उसमें ज़्यादा रुचि लेता है।

क्रियाएँ आयु स्तर के अनुरूप हों— बच्चों को करायी जाने वाली क्रियाएँ उनकी उम्र और उनके मानसिक स्तर के अनुरूप होनी चाहिए। बच्चे का मस्तिष्क एक टोकरी की तरह होता है। एक टोकरी में उतने ही फल समा सकते हैं, जितना कि उसमें स्थान है। यदि स्थान से ज़्यादा फल डालेंगे तो उसका यह परिणाम निकलेगा कि ऊपर वाले फल गिरने लगेंगे और नीचे के फल सड़ने लगेंगे। इसी प्रकार बच्चों से उनके मानसिक स्तर से ज़्यादा कठिन क्रियाएँ करवाएँगे तो उनके मस्तिष्क का पर्याप्त ज्ञान भी समाप्त हो जाएगा, इसलिए क्रियाओं को नियोजित करते समय मानसिक स्तर को अनेदखा नहीं करना चाहिए।

आदर्श नर्सरी विद्यालय की सुविधाएँ

नर्सरी विद्यालय बहुत छोटा नहीं होना चाहिए। कक्षाएँ बड़े आकार की होनी चाहिए जिसमें बच्चा आसानी से घूम-फिर सके। ज़्यादा अच्छा होगा कि नर्सरी कक्षाएँ ज़मीनी स्तर पर हों। यदि पहली मंजिल पर हैं तो पकड़ने के लिए सीढ़ियों पर सहारे की सुविधा होनी चाहिए। कक्षा में बैठने का प्रबंध ऐसा होना चाहिए कि प्रत्येक बच्चा अध्यापिका की नज़र में रहे।

एक सभागार भी होना चाहिए जहाँ सांस्कृतिक कार्यक्रम हो सकें। सभागार बड़ा होना चाहिए जिसमें अभिभावक भी कार्यक्रम देख सकें। रेत से खेलने के लिए स्थान होना चाहिए। एक टब में भी रेत भरकर रेत के खेल का आयोजन करना चाहिए। रेत साफ़-सुथरी और छनी हुई होनी चाहिए। रेत में खेलने वाले विभिन्न प्रकार के खिलौने होने चाहिए।

कला कक्ष की व्यवस्था होनी चाहिए' जिसमें बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार के रंग, ड्राइंग बोर्ड आदि होने चाहिए। यहाँ पर बच्चे विभिन्न प्रकार की सृजनात्मक क्रिया कर सकते हैं।

यदि विद्यालय में *स्वीमिंग पूल* बना सकते हैं तो यह ज़्यादा गहरा नहीं होना चाहिए। पानी साफ़ रखना चाहिए। पानी के खेल बच्चों को बहुत पसंद होते हैं। कक्षाएँ रंग-बिरंगी होनी चाहिए। डिस्प्ले बोर्ड बच्चों के कद के अनुसार होने चाहिए। बोर्ड पर सामग्री समय-समय पर बदलनी चाहिए।

© NCERT not to be republished

एक चिकित्सा कक्ष होना भी चाहिए। बच्चे की तबीयत खराब होने पर उसे चिकित्सा कक्ष में आराम करवाया जा सकता है। प्राथमिक चिकित्सा किट होनी चाहिए, जिसमें ज़रूरत की दवाएँ रख सकते हैं।

कक्षा में विभिन्न प्रकार के पहनावे होने चाहिए, जिन्हें पहनकर बच्चे विभिन्न प्रकार के अभिनय करके अपनी अभिव्यक्ति कर सकें।

चित्र देखने/पढ़ने के लिए किताबें होनी चाहिए। यहाँ पर विभिन्न प्रकार के बच्चों की आयु स्तर के अनुरूप पुस्तकें होनी चाहिए। पुस्तकों का रिकॉर्ड होना चाहिए। पुस्तकें रंग-बिरंगी व अक्षर बड़े-बड़े अंकित होने चाहिए। सप्ताह में दो बार हर बच्चे को चित्र देखने/पढ़ने के लिए पढ़ने के कोने/जहाँ पुस्तकें रखी गई हों, वहाँ जाने का अवसर मिलना चाहिए।

खेल का मैदान होना चाहिए। यहाँ पर विभिन्न प्रकार के झूले होने चाहिए।

शौचालय साफ़ होने चाहिए। यहाँ पर सफ़ाई का विशेष ध्यान देना चाहिए। हाथ धोने की व्यवस्था होनी चाहिए तथा हाथ पोछने के लिए तौलिए एवं साबुन को उचित स्थान पर रखा होना चाहिए।

आदर्श नर्सरी विद्यालय की सुरक्षा

एक आदर्श नर्सरी विद्यालय में सुरक्षा का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

- गेट पर सिक्योरिटी गार्ड होना चाहिए जिसका कार्य जाँच पड़ताल करके ही किसी भी व्यक्ति को विद्यालय परिसर में घुसने की अनुमति देना/या नहीं देना हो।
- माता-पिता को 2 कार्ड बनाकर देने होंगे। माता-पिता जब बच्चे को लेने आते हैं तो वह कार्ड गेट पर चौकीदार को दिखाना चाहिए। बिना माता-पिता के परिचय पत्र के किसी को भी दोपहर की छुट्टी के समय बच्चा नहीं सौंपना चाहिए।
- कक्षा के अंदर जो ब्लॉक्स, पज़ल्स, खिलौने आदि होते हैं, वे बड़े आकार के होने चाहिए ताकि बच्चे उनको मुँह में व नाक में नहीं डाल सकें। मोती एवं बीजों से खेलते समय बच्चों पर विशेष निगरानी रखनी चाहिए।
- मैदान में जो झूले होते हैं, वे बच्चों के कद के अनुसार होने चाहिए ताकि बच्चे सुविधाजनक रूप से उनका प्रयोग कर सकें। झूले टूटे-फूटे नहीं होने चाहिए। कक्षा के खिलौने व झूले समय-समय पर साफ़ करते रहना चाहिए। रेत के खेल एवं खेल के मैदान में कोई नुकीली चीज़ नहीं होनी चाहिए जिससे खेलते समय बच्चों को नुकसान हो।
- कमरों एवं शौचालय के फर्श फिसलने वाले नहीं होने चाहिए। कमरे में बिछने वाली दरियाँ फटी नहीं होनी चाहिए ताकि बच्चे सुविधापूर्वक चल-फिर सकें। *इलेक्ट्रिक प्लग* बच्चों की पहुँच से दूर होने चाहिए।
- परदे, दरवाज़े, खिड़कियाँ बच्चों को नुकसान पहुँचाने वाले न हों।
- नुकीली वस्तुएँ, जैसे— कैंची, ब्लेड आदि बच्चों की पहुँच से दूर रखनी चाहिए।
- बच्चों के घर का पता एवं फ़ोन नंबर का रिकॉर्ड रखना चाहिए ताकि ज़रूरत पड़ने पर जल्दी से अभिभावक से संपर्क स्थापित किया जा सके।
- कक्षा का फ़र्नीचर टूटा-फूटा नहीं होना चाहिए। बैठने की व्यवस्था सुविधाजनक होनी चाहिए। बच्चे के लिए कक्षा में घूमने-फिरने का स्थान होना चाहिए। बच्चों के जाने के बाद प्रतिदिन फ़र्नीचर की साफ़-सफ़ाई करनी चाहिए।

© NCERT not to be republished

- एक आदर्श नर्सरी विद्यालय में प्रशिक्षित शिक्षिकाएँ होनी चाहिए। सहायिका भी प्रशिक्षित होनी चाहिए क्योंकि प्रशिक्षित स्टाफ़ ही बच्चों की आवश्यकताओं को अच्छी तरह से समझकर उनकी पूर्ति कर सकता है। समय-समय पर स्टाफ़ के लिए कार्यशाला आयोजित करनी चाहिए ताकि स्टाफ़ का ज्ञान बढ़ सके।
- नर्सरी विद्यालय में बच्चों का समय 4 घंटे से ज़्यादा नहीं होना चाहिए। विद्यालय का समय सुबह 9 बजे से पहले का नहीं रखना चाहिए। स्कूल बैग बहुत छोटा होना चाहिए जिसमें बच्चे टिफ़िन, डायरी ला सकें। बच्चों की क्रियात्मक शीट्स या कोई फाइल/वर्क बुक कक्षा में रखी होनी चाहिए ताकि बच्चों को भारी बैग न उठाना पड़े।

बच्चों को कठोर अनुशासन में नहीं रखना चाहिए, लेकिन स्वतंत्रता भी एक दायरे में देनी चाहिए। यदि विद्यालय में पौष्टिक आहार देने की व्यवस्था है तो इस बात का पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिए कि भोजन सफ़ाई एवं सुरक्षा के साथ बनाया जाए। भोजन पकाते समय किसी प्रकार की लापरवाही नहीं बरती जाए। बच्चों को भोजन परोसने से पहले स्टाफ़ को स्वयं खाकर देखना चाहिए।

एक आदर्श नर्सरी विद्यालय में बच्चों की शैक्षिक प्रगति या विकास को देखने के लिए कोई परीक्षा नहीं होनी चाहिए। बच्चे की प्रतिदिन की क्रियाओं को देखकर बच्चे की उन्नति को आँकना चाहिए। बच्चे स्वभाव से उदासीन होते हैं, ज़रूरी नहीं है कि निश्चित परीक्षा के समय वे अपना अच्छा प्रदर्शन कर सकें। उदाहरण के लिए, परीक्षा के दिन बच्चा सेब में नीला रंग भर भी सकता है क्योंकि आज उसका लाल रंग भरने का मन नहीं है, तो ऐसे में बच्चे को कम नहीं आँका जाना चाहिए।

अभिभावकों के साथ संबंध

शिशु की शिक्षा एवं सीखने का केंद्र घर है। प्रति दो तीन माह में अभिभावक सभा का आयोजन करना चाहिए जिसमें हम बच्चे के विकास या समस्या (यदि कोई हो तो) पर अभिभावकों से विचार-विमर्श कर सकते हैं। बच्चों द्वारा किए गए कार्य को अभिभावकों को दर्शाया जा सकता है।

साल में आने वाले विभिन्न त्योहारों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होने चाहिए। इसमें अभिभावकों को बच्चों द्वारा किए गए कार्य को दिखाने के लिए आमंत्रित कर सकते हैं।

डॉक्टरी जाँच के दिन अभिभावकों को बुला सकते हैं ताकि वे डॉक्टर से बच्चों के विषय में विचार-विमर्श कर सकें।

बाल मेले व वार्षिक मेले में अभिभावकों को आमंत्रित करना चाहिए। अभिभावकों को स्टॉल लगाने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं।

यदि बच्चा किसी गंभीर बीमारी से ग्रस्त है और वह काफ़ी समय से विद्यालय में नहीं आ रहा है तो अध्यापिकाएँ घर जाकर उसका हाल-चाल पूछ सकती हैं। डायरी द्वारा भी अभिभावकों से संपर्क स्थापित कर सकते हैं।

आदर्श नर्सरी विद्यालय का उद्देश्य

एक आदर्श नर्सरी विद्यालय का उद्देश्य बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाना नहीं, वरन् उन्हें पढ़ने के लिए तैयार कराना होना चाहिए। यह एक तत्परता कार्यक्रम होना चाहिए। बच्चे का सर्वांगीण विकास करना विद्यालय का उद्देश्य होना चाहिए। बच्चे का शारीरिक,

© NCERT not to be republished

मानसिक, सामाजिक, भावात्मक, सौंदर्यानुभूति विकास हो, ऐसे अवसर प्रदान करने चाहिए।

बच्चे की भाषा के विकास के लिए उसकी बोलने एवं सुनने की क्षमता का विकास, पढ़ने व लिखने की तैयारी करानी चाहिए। बच्चों को रंगों व आकारों का ज्ञान एवं उनकी ज्ञानेंद्रियों का विकास कराना चाहिए। उन्हें वातावरण संबंधी ज्ञान, जैसे— फलों, सब्जियों, यातायात के साधन, जानवरों, हमारे मददगार, पानी, हवा इत्यादि के साथ-साथ त्योहारों का ज्ञान भी देना चाहिए। उन्हें छोटी एवं बड़ी माँसपेशियों को विकसित करने के अवसर मुहैया कराने चाहिए।

आदर्श नर्सरी विद्यालय का कार्यक्रम एवं पाठ्यक्रम

विद्यालय का कार्यक्रम एवं पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो बच्चों की व्यक्तिगत विभिन्नता को ध्यान में रखकर बनाया गया हो। यह बच्चों के क्रमिक विकास में सहायक होगा।

कार्यक्रम में स्वतंत्र एवं निर्देशित दोनों प्रकार की क्रियाएँ होनी चाहिए ताकि बच्चों में आवश्यक कौशल और मूल्यों का सही ढंग से विकास हो सके।

कार्यक्रम में इंद्रियों को विकसित करने पर ज़्यादा महत्व देना चाहिए क्योंकि बच्चे इंद्रियों से ही सीखते हैं। कार्यक्रम में सृजनात्ममक खेलों को अधिक महत्व देना चाहिए। बच्चे स्वभाव से कल्पानाशील होते हैं, यदि उनकी कल्पना शक्ति का आरंभ से पोषण किया जाए तो वे विकास के सभी क्षेत्रों में सहायक सिद्ध होंगी।

कार्यक्रमों में बच्चों में अपनी देखभाल करने के कौशलों का विकास, प्रत्यक्ष ज्ञान पर आधारित अधिगम तथा शैक्षिक तैयारी के कार्यक्रमों को शामिल करना चाहिए। बच्चों को अपने पर्यावरण से सीधे संपर्क द्वारा सिखाना चाहिए। अधिक से अधिक प्रत्यक्ष अनुभव देने का प्रयास करना चाहिए। बच्चों को वस्तुओं का निरीक्षण करने तथा उनका वर्णन करने, उनका इच्छानुसार प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

अत: हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि यदि उपरोक्त सभी बातें नर्सरी विद्यालय में होंगी तो उसे आदर्श नर्सरी विद्यालय कह सकते हैं।

© NCERT not to be republished